RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.

वर्ष: 72 अंक : 40

सृष्टि संवत् 1960853116

3 जनवरी 2016

दयानन्दब्द 189

वार्षिक : 100 रू.

आजीवन : 1000 रू.

दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 40, 31/3 जनवरी 2016 तदनुसार 19 पौष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

महान् ने महान् जहान बनाया

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

न मा तमन्न श्रमन्नोत तन्द्रन्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम्।
यो मे पृणाद्यो ददद्यो निबोधाद्यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत्।।

—ऋ० २।३०।७

शब्दार्थ—**न-न मा**-मुझको **तमन्**-तमकाता है, **न-न श्रमत्**-थकाता है **उत**-और **न-न तन्द्रत्**-अलसाता है, अतः हम **न**-नहीं **वोचाम**-कहते कि **सोमम्**-सोम को **मा**-मत **सुनोत**-इति-कूटो **यः**-जो **मे**-मुझे **पृणात्**-तृप्त करता है **यः**-जो मुझे **ददत्**-देता है **यः**-जो **निबोधात्**-जगाता है सावधान करता है **यः**-जो **मा**-मुझे **सुन्वन्तम्**-उप-सोम कूटने वाले के पास **गोभिः**-गौओं के साथ **आयत्**-प्राप्त होता है।

व्याख्या-सोमपान कर ले। न। क्यों ? **'न मा तमत्'**-मुझे तमकाता नहीं, मुझमें तेजी नहीं लाता। कहते हैं, सोमपान से तमक आती है, मुझमें नहीं आती, अतः मैं न पीऊंगा। पी ले। सोमरस-निष्पादन में बड़ा परिश्रम हुआ है। **'न श्रमत्'**-मुझे तो नहीं थकाया। पी ले, मस्ती देता है। **'नोत तन्द्रत्'**-मुझे मस्ती तो क्या, तन्द्रा भी नहीं देता। मेरा देह तो जरा भी नहीं अलसाया। तो फिर क्या सोमरस न निकाला करें ? **'न वोचाम मा सुनोतेति सोमम्'**-हम यह भी नहीं कहते कि सोमरस न निकालो। तुम्हें सुख देता है, तुम रस निकालो, पीओ। तुम कुछ करोगे या नहीं ? **'यो मे पृणात्'**-जो मुझे तृप्त कर दे, उसकी मुझे चाह है। सोमरस तृप्त तो करता है, किन्तु **'यो ददत्'**-जो मुझे कुछ दे भी। मस्ती देगा। **'यो निबोधात्'**-जो मुझे जगाए। प्रमाद, आलस्य के वश हुआ उन्मत्त तो मैं पहले ही बहुत हूं, मुझे तो कोई जगाए। सोने से मैं ऊब गया।

फिर तुम क्या करना चाहते हो ? मैं भी सोम कूटूंगा। सोमरस तैयार करूंगा। क्यों ? कैसा ? **'यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत्'**-मैं सोम कूटूं और वह मेरे पास गौएं लेकर आए। यह क्या कह रहे हो ? रूप दोहने वाली, शब्दक्षीर देने वाली, स्पर्श-स्वाद देने वाली, सुगन्धित क्षीर देने वाली गौएं चाहिएं। बस? इतना ही? तो तुम कायाकल्प करना चाहते हो। सोमलता से यह हो सकता है।

यह तो कटने, रस निकालने, पीने के पश्चात् होगा। मुझे तो सोम कूटते समय ही मिलना चाहिए। कहो, पहचाना मेरा सोम ? मेरा सोम जगाता है, तुम्हारा सुलाता है। तुम्हारा सोम कायाकल्प है, मेरा बुद्धि-कायाकल्प-बुद्धि की नवीनता करता है।

तो फिर हम सोम कूटना बन्द कर दें। न भाई, **'न वोचाम'** हम ऐसा नहीं करते। क्यों ? **'महां असुन्वतो वधः'** [ऋ. ८।६२।१२]-सोम न कूटने वाले को महाहत्या लगती है। और ? **'भूरि ज्योतींषि सुन्वतः'** [ऋ. ८।६२।१२]-सोम निष्पादन करने वाले को महान् प्रकाश मिलते हैं। मुझे प्रकाश दीजिए। तू तो गौएं मांग रहा था, अब प्रकाश की कामना करने लगा। गौ और ज्योति एक है। कैसे ? वेद ने ही बतलाया-**'गोभिष्टरेमामतिं दुरेवाम्'** [ऋ. १०।४४।१०] गौओं के द्वारा दुर्गति और अकर्मण्यता को तर जाएं। यह काम तेरी गौ से न होगा, मेरी ज्ञान-गौ ही पार उतारेगी। वही दुर्गति की, अमति-नास्तिकता की दुर्दशा दिखलाएगी और उसे दूर भगाएगी।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

वर्ष 2016 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2016 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं। -प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

सृष्टि रचना की एक झलक- वेद एवं एतरेय उपनिषद व अन्य आर्ष ग्रन्थों से

-ले० पंडित उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून)

श्रद्धेय, जिज्ञासु पाठक महोदय जी, सृष्टि रचना का विषय विस्तृत एवं अति गम्भीर है। विद्वान् एवं नियमित स्वाध्यायशील पाठक तो इस विषय में विज्ञ हैं, ही किन्तु अन्य जिज्ञासु पाठकों की भी जानकारी हेतु यह छोटा सा लेख प्रस्तुत है।

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीन्नान्यत्किचन

मिषत स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति।।1।।(ऐतरेय उपनिषद)

जब सृष्टि की रचना नहीं हुई थी तब पहले पहल एक आत्मा ही था। कोई दूसरी चीज़ नहीं थी। आत्मा ने ईक्षम सब कुछ बारीकी से विचार से देख लिया कि लोकों का अर्थात् नाना रूप सृष्टि का किस-किस रूप में सर्जन करूं और उसने चार लोकों को रचा-''अम्भस'', मरीचीं, ''मर'' और ''आपस'' द्युलोक से परे और द्यु लोक तक जो लोक हैं व अम्भस लोक हैं, उसके नीचे अन्तरिक्ष में जो सूर्च चन्द्र नक्षत्रादि प्रकाश-युक्त लोक हैं वह मरीची लोक है। यह पृथ्वी जिसमें प्राणी उत्पन्न होते और मरते हैं, यह मृत्यलोक ''मर'' लोक हैं पृथ्वी के भी जो नीचे हैं वह 'आपस' लोक हैं।

स ईक्षतेमे नु लोका लोकपा-लान्नु सृजा इति।

सोअदम्य एवं पुरषं समुद्ध-त्यामूर्च्छयत्।।(ऐतरेय उपनिषद)

उसने फिर ईक्षण किया कि रचे गए लोकों की रक्षा कैसे होगी ? इसलिए लोकपालों की रचना करके जल में से पुरुष को निकाला। जल का अर्थ पानी नहीं अपितु पंच महाभूतों के सूक्ष्म रूप को जिनके कारण रचना सम्भव हो सकती है, जल कहा गया है। जल से पुरुष निकाला का अभिप्राय विराट पुरुष से है उस पुरुष से जिसे जगह-जगह ''हिरण्यगर्भ'' कहा गया है। प्राकृतिक सूक्ष्म तत्वों से विराट पुरुष को हिरण्यगर्भ हो रचने के बाद उसने मूर्च्छित किया गया। विराट पुरुष कच्ची हालत में था मूर्च्छित करने की उसके परिपाक की आवश्यकता थी।

ईश्वर सृष्टि कर्त्ता, जीव भोक्ता और प्रकृति भोग्या है। इसके रचयिता ईश्वर है, और ईश्वर ने अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रचाए। प्रकृति सूक्ष्म और जड़ है जो कि ईश्वर के आधार पर रहती है ईश्वर महान और सूक्ष्मतम है।

एक अरब छिआनबे करोड़, आठ लाख, बावन हजार नौ सौ छहत्तर वर्ष पूर्व यह पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रादि कुछ नहीं था, बुद्ध जीवात्माएं मूर्च्छित अवस्था में थी। जैसे निन्द्रा में कोई अनुभूति नहीं होती, उसी तरह प्रलय में भी नहीं होती है। सत्व, रज, तम कणों को ईश्वर इकट्ठा करके अपने ज्ञान सामर्थ्य से महत्त्व फिर अहंकार फिर पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कर्म इन्द्रियां मन व पांच तन्मात्राएं (सूक्ष्मभूत) कुल अठारह तत्व फिर पांच स्थूल भूत उसमें सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी यह स्थूल जगत बनाया। वनस्पति, मछलियां, कीट, पतंग, पशु आदि के उपरान्त अन्त में मनुष्यों के शरीर की रचना की और मनुष्य युवा शरीर वाले उत्पन्न हुए और मैथुनी सृष्टि बना।

प्राणी के उत्पत्ति के चार प्रकार-1. जरायुज अर्थात् मनुष्य पशु आदि 2. अण्डज: अर्थात्-पशु कीट पतंग आदि 3. उदभिज: अर्थात् वृक्ष आदि पृथ्वी से निकलते हैं 4. स्वेदज: अर्थात् पसीने से जुएं और गेहूं आदि में कीड़े कीटाणु आदि।

ईश्वर ने सृष्टि का संविधान बनाया-चार वेद बनाए, ऋग्वेद, अग्नि, ऋषि, यजुर्वेद वायु, ऋषि, सामवेद आदित्य ऋषि और अथर्ववेद अगिरां ऋषि को चारों वेदों का ज्ञान दिया।

सृष्टि की आयु-1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 115 वर्ष अमैथुनी सृष्टि को बीत गए हैं और पूर्ण सृष्टि की आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है और इतने ही वर्ष प्रलय की अवस्था रहती हैं फिर विकास की प्रक्रिया आरम्भ होती है।

ईश्वर ने सृष्टि की अद्भुत रचना की है-अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, तारे व सारे ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किए हुए हैं। सूर्य पृथ्वी से निरन्तर बिना किसी सहारे के अपनी धुरी पर घूमते रहते हैं किन्तु आश्चर्य है इनकी दूरी घटती बढ़ती नहीं है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 17 दिन 9 घण्टे 56 मिनट 12 सेकेण्ड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 23 घण्टे 56 मिनट 9 सैकेण्ड में घूमती है और सूर्य की परिक्रमा करते हुए एक सेकेण्ड में 18 मील की दूरी तय करती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 1037 मील प्रति घण्टा की रफ्तार से घूमती है।

सूर्य का व्यास 8 करोड़ 58 लाख 85 हज़ार मील है और प्रकाश की किरण 8 मिनट में पृथ्वी पर पहुंचती है। सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है और अपनी धुरी पर 9 घण्टे 55 मिनट में घूमता है, और 333 दिन में सूर्य की परिक्रमा करता है। सूर्य जलता हुआ अग्नि का पिण्ड है। इसका तापमान 12000 डिग्री सेन्टीग्रेड है और दूरी इतनी है कि तापमान सामान्य बना रहता है। अगर थोड़ी सी बाल बराबर भी पृथ्वी के नजदीक आ जाए तो पृथ्वी जल कर राख हो जाएगी और थोड़ी सी भी दूर हो जाए तो पृथ्वी बर्फ बन जाएगी और सूर्य की किरण पृथ्वी पर सीधी पड़े तो जीना दूभर हो जाएगा। ईश्वर की व्यवस्था से इनमें सुरक्षा ओज किरणें रहती हैं जिसे ओज परत कहते हैं।

पृथ्वी का व्यास 7900 मील है। पर्वतों की ऊंची चोटी 511 मील ऊंची है और समुद्र की गहराई 7 मील है। 3/4 पृथ्वी में जल ही जल है। और संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहा है, यदि उसमें जरा सा भी व्यावधान हो जाए तो ब्रह्माण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जाएगा।

सर्वाधिक तारों की चमकने वाली संख्या 20 है इसमें व्यास नाम का तारा सर्वाधिक दीप्तमान है और सूर्य की तुलना में यह तारा 21 गुना अधिक है। सूर्य का तापमान 2310 डिग्री फारनेहाइट है जबकि पृथ्वी का 110 डिग्री है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 वर्ष में पूर्ण करती है और उसकी गति प्रति घण्टा 1 लाख 1 सौ निन्नावें मील होती है और सौर मण्डल का व्यास 1 शंख 18 खरब किलोमीटर है और समूचे ब्रह्माण्ड को सम्भालना सूर्य का काम है और समस्त और मण्डल बिना टकराए सहायता करते हैं। समूचा ब्रह्माण्ड कितना बड़ा है इसके रचयिता केवल-केवल परमपिता परमेश्वर है।

सूर्य की गर्मी-सूर्य जीवन और पृथ्वी का आधार है और 2 अरब कुछ करोड़ वर्ष उपरान्त गर्मी कम होती जाएगी। तब इस पर आधारित मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वनस्पति आदि धीरे-धीरे क्षीण होते हुए नष्ट हो जाएंगे। इस उत्पत्ति प्रलय की प्रक्रिया से संसार की नश्वरता ज्ञात होती है।

सप्तास्यासन परिधयस्त्रि: सप्त समिध: कृता:।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अवध्नन पुरुषं पशुम।।(ऋ.)

अर्थात् ईश्वर ने एक-एक लोक के चारों और सात-सात परिधि ऊपरी रची हैं जो गोल चीज़ के चारों ओर एक सूत के नाप के जितना परिमाण होता है उसको परिधि कहते हैं। सो जितने ब्रह्माण्ड में लोक हैं ईश्वर ने उन एक-एक पर सात-सात आवरण बनाए। एक समुद्र 2 त्रसरेणु मेघ मण्डल का वायु 4 वृष्टिजल पून्वृष्टि जल के ऊपर एक प्रकार का वायु छ:-अत्यन्त सूक्ष्म वायु जिसको घन्जय कहते हैं। 7-सूत्रात्मा वायु से सात परिधि कहते हैं तथा इस ब्रह्माण्ड की रचना भी सामगरी इक्कीस प्रकार की होती है।

ईश्वर ने प्रकृति से लेकर घास प्रयन्त जंगल को रचाया है। इसलिए ईश्वर का नाम विश्वकर्मा है और सब जगत उत्पन्न नहीं हुआ था, तब ईश्वर के सामर्थ्य के कारण रूप में वर्तमान था। इसी प्रकार ईश्वर अपने सामर्थ्य से कार्य रूप जगत को रचाता है।

जब ईश्वर ने मनुष्य शरीर आदि को रचा, तब मनुष्य दिव्य कर्म करके देव कहाता है और संसार में उत्तम सुख को पाता है और परमेश्वर की प्राप्ति रूप मोक्ष की इच्छा करके उत्तम कर्म उपासना और ज्ञान में पुरुषार्थ करता है वह उत्तम देव कहाता है।

आत्म निवेदन-सृष्टि रचना का संक्षिप्त लेख का अभिप्राय मेरा केवल यह है कि आज के मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान वेदों की शिक्षा पर न चल कर अन्धविश्वासों और कल्पनाओं में भटक कर उस सत्य ईश्वर को भूल बैठे हैं, उन्हें ईश्वर की सत्ता का आभास हो सके, और वह वेदों की ओर लौट सकें।

सम्पादकीय.....✍

वैदिक सिद्धान्त ही आर्य समाज की मान्यताएं

जो लोग आर्य समाज से परिचित नही हैं उनकी ऐसी मान्यता है कि आर्य समाजी कुछ नहीं मानते। वह देवी देवताओं की पूजा नहीं करते। भगवान राम और कृष्ण को नहीं मानते। यह भ्रान्ति उनकी आर्य समाज की मान्यताओं के प्रति अनभिज्ञता के कारण होती है। आर्य समाज प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर कसकर विवेकपूर्ण ढंग से मानता है। वह न अन्धविश्वास की परम्पराओं का समर्थक है, न लकीर का फकीर बनने में विश्वास रखता है और न ही वह आधुनिक चकाचौंध में बहता है। सभी बातें सत्य और असत्य को विचार कर करना ही आर्य समाज का ध्येय और उद्देश्य है। आर्य समाज सब अच्छाईयों को मानता और स्वीकार करता है। वह रूढ़िवाद व दकियानूसी विचारधाराओं का परित्याग करने का आग्रह करता है तथा संकीर्णता का प्रबल विरोधी रहा है। आर्य समाज की मान्यताएं वेदों पर आधारित होने से सनातन और शाश्वत हैं। साथ ही देश काल परिस्थिति के अनुसार आर्य समाज सामयिक सुधारों को भी महत्व देता है।

1. ईश्वर एक है अनेक नहीं। वेद और वेदानुकूल सभी ग्रन्थों में ऐसा ही लिखा है। एक ही ईश्वर को अनेक नामों से अर्थात् उसके गुण, कर्म, स्वभाव के आधार से पुकारा जाता है। आर्य समाज के दूसरे नियम में परमात्मा सत् चित् और आनन्दस्वरूप है। वह निराकार सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालू, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। पंचमहाभूत अर्थात् पृथिवी, आकाश, वायु, अग्नि, जल और संसार का कोई भी महापुरूष उपास्य देव नहीं है। प्रकृति से बने पदार्थ और कोई जीव-जन्तु उपास्य देव नहीं है।

2. आर्य समाज की मान्यता है कि ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति का नाम मोक्ष है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है। आत्मा परमात्मा के साक्षात्कार का अन्य कोई मार्ग नहीं है। मोक्ष के पश्चात् जीव की पुनरावृत्ति भी आर्य समाज मानता है, परन्तु संसार के सभी मत-मतान्तर जीव की पुनरावृत्ति को नहीं मानते। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि सीमित कर्मों का फल असीमित नहीं हो सकता। अत: मुक्ति अनन्तकाल की नहीं हो सकती। जीवों का सामर्थ्य परिमित है। असीम आनन्द को भोगने का सामर्थ्य जीवों में नहीं।

3. वैदिक धर्म तीन अनादि सत्ताओं को स्वीकार करता है- परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति। केवल जैन मत को छोड़कर संसार के सभी मत-मतान्तर प्रकृति के विषय में मौन हैं। प्रकृति के बिना सृष्टि रचना हो ही नहीं सकती। जैसे आटे के बिना रोटी नहीं पकती। अन्य मतों में ईश्वर को ही निमित्त व उपादान कारण मान लिया गया है। निमित्त कारण चेतन होता है और उपादान कारण जड़ होता है। इसलिए चेतनता और जड़ता दो विरोधी गुणों का ईश्वर में होना असम्भव है। अत: ईश्वर से भिन्न प्रकृति की सत्ता को मानना ही पड़ेगा।

4. आर्य समाज वर्ण व्यवस्था को गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर स्वीकार करता है, जन्म के आधार पर नहीं। जन्म को आधार मानने पर ही छूआछूत, घृणा, द्वेष, भेदभाव बढ़ा है। आर्य समाज ने वैदिक धर्म के आधार पर ही मानव जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रमों में विभक्त किया है। आर्य समाज ने वैदिक धर्म के आधार पर ही नारी को बहुत ऊंचा स्थान दिया है। अन्य मतों में नारी को नरक का द्वार, पांव की जूती समझा जाता था। आर्य समाज ने बताया कि नारी केवल विषय भोग की वस्तु नहीं है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता के आधार पर नारी को पूजनीय बताया।

5. आर्य समाज पाखण्ड़ और अन्धविश्वास को स्वीकार नहीं करता। भूत-प्रेत, जादू , टोने , तन्त्र विद्या का आर्य समाज विरोध करता है। आर्य समाज तन्त्र मन्त्र को नहीं मानता। डोरा ताबीज देने से किसी के दु:ख दूर नहीं हो सकते। ये डोरा ताबीज ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था को नहीं बदल सकते। रसरयन, मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण आदि जितनी क्रियाएं हैं ये सब व्यर्थ हैं। ये सब क्रियाएं लोगों को अविद्या और अज्ञान में फंसाने वाली हैं। आर्य समाज में जीवात्माओं के कर्मों का सम्बन्ध ग्रहों से नहीं माना गया है। कर्मों का सम्बन्ध जीवात्माओं के साथ होता है। ईश्वर की कर्म फल व्यवस्था के अनुसार जीवों को फल प्राप्त होता है।

6 आर्य समाज में वैदिक धर्मानुसार जल और स्थल को तीर्थ नहीं माना गया है। वैदिक धर्म में तीर्थ उन्हें कहते हैं जो मनुष्यों को तारते हैं। वेदादि सत्य शास्त्रों को पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निष्कपटता, सत्यभाषण, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता पिता की सेवा, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरूषार्थ, ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति ये सब तीर्थ हैं, क्योंकि ये सब मनुष्यों को तारने वाले हैं। आर्य समाज अहिंसा और हिंसा दोनों के समन्वय को स्वीकार करता है। किसी को बिना कारण शारीरिक, मानसिक और वाचिक रूप से पीड़ा नहीं देनी चाहिए, परन्तु जो दुष्ट, दुराचारी और देश, धर्म और संस्कृति पर आक्रमण करने वाले होते हैं उनको प्रताड़ित करना वैध है।

7. वैदिक धर्मानुसार आर्य समाज की मान्यता है कि जीवात्माएं कर्म करने में स्वतन्त्र हैं और फल भोगने में परतन्त्र हैं अन्य मतों की धारणा है कि जीवात्माएं ईश्वर की इच्छानुसार ही कार्य करती हैं। अगर ऐसा है तो आत्माओं को शुभ और अशुभ कर्मों का फल नहीं मिलना चाहिए। क्योंकि कर्म करने में उनकी स्वतन्त्रता ही नहीं है। जब स्वतन्त्रता ही नहीं है तो आत्माएं कर्मफल की भागी क्यों बनें। कर्मफल का भागी भी ईश्वर को ही होना चाहिए।

इस प्रकार आर्य समाज की मान्यताओं को जानने और समझने के लिए वैदिक साहित्य का स्वाध्याय अथवा आर्ष साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। तभी आर्य समाज और उसकी मान्यताओं की वास्तविक पहचान हो सकती है। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वैदिक मान्यताओं को धारण करना आवश्यक है। वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार के लिए उसका गहन चिन्तन और मनन आवश्यक है। आर्य समाज की उन्नति भी तभी हो सकती है जब सब लोग आर्य समाज की मान्यताओं से भली-भांति परिचित होंगे।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद एक और हुआ वैसा ही प्रयास

-ले० खुशहालचन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्ज़, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता

सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम को तो हर एक थोड़ा पढ़ा लिखा भारतीय भी जानता है कि सन् 1857 में एक सुसंगठित व योनजाबद्ध स्वतन्त्रता संग्राम हुआ था जिसका नेतृत्व झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तांत्या टोपे, नाना साहब, राजा कुंवर सिंह व राव तुलाराम आदि ने किया था। मूल में इसे उत्साहित करने वालों में स्वामी पूर्णानन्द (स्वामी विरजानन्द के गुरू) स्वामी बिरजानन्द और महर्षि दयानन्द के नाम भी आते हैं। इस संग्राम के करने की तारीख 31 मई 1857 रख दी गई थी, परन्तु मंगल पाण्डे ने जल्दबाजी में एक अंग्रेज़ ह्यूसन को गोली मार कर 29 मार्च 1857 को ही ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा कर दी जिससे योजना का भण्डाफोड़ हो गया और अंग्रेज़ों ने इस विद्रोह को बड़ी क्रूरता से दबा दिया और इसको सैनिक विद्रोह घोषित कर दिया। परन्तु यह सैनिक विद्रोह नहीं था बल्कि एक योजनाबद्ध तरीके से सब सैनिक छावनियों में स्वतन्त्रता की भावना फैला कर उनमें विद्रोह की भावना भर दी थी, साथ ही गांव-गांव और शहर-शहर में भी यही भावना गुप्त रूप से फैला कर एक निश्चित दिन ही पूरे भारत में एक साथ विद्रोह करने की योजना थी जिसे मंगल पाण्डे ने असफल कर दिया। चालीस वर्षों तक अंग्रेज़ों के दमन चक्र के कारण भारत में किसी ने भी सिर उठाने का साहस नहीं किया। सन् 1897 में पूना में प्लेग फैलने पर मकान खाली कराने के बहाने मिस्टर रैण्ड ने भारतीयों पर बड़े अत्याचार किए और उनके मान-सम्मान को भी आघात पहुंचाया उसकी हत्या करके बदला लिया दो सगे भाईयों दामोदर चापेकर व बाल कृष्ण चापेकर ने और तीसरे भाई वासुदेव चापेकर ने उनको दो द्रविड़ भाई जिन्होंने विश्वासघात करके चापेकर बन्धुओं को फांसी दिलवाई थी उन मुखाबिन्दों को गोली से उड़ा दिया। इस प्रकार आजादी के लिए तीनों सगे भाई फांसी पर खुशी-खुशी झूल गए। इसके बाद श्याम कृष्ण वर्मा जिन्होंने महर्षि दयानन्द से देश भक्ति सीखी थी और उन्हीं के आवास के लिए ''इण्डिया हाउस'' की स्थापना की जिसमें भारत के सभी क्रान्तिकारी जो हॉलैंड जाते थे, इसी ''इण्डिया हॉऊस'' में ठहरते थे। इनमें लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम-ए., वीर सावरकर आदि मुख्य थे जो यहां रहकर आगे की योजना बनाते थे और भारत के क्रान्तिकारियों को सहयोग भी भेजा करते थे। यहीं पर रहकर मदनलाल ढींगरा ने 1 जुलाई 1909 में सर विलियम कर्जन वाईली जो भारतीय क्रान्तिकारियों को पथ-भ्रष्ट करता था उसको गोली मारकर हत्या की। यहीं पर रहकर सरदार उधम सिंह ने माइकेल ओडवायर जिसने 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड करने वाले जनरल डायर की प्रशंसा की थी। जनरल डायर पहले ही अपनी मृत्यु से मर चुका था, इसलिए माइकेल ओडवायर को 21 साल बाद 13 मार्च 1940 में मारकर फिर स्वयं 31 जुलाई 1940 को अपने हाथों फांसी के फंदे को अंगीकार करके अपने जीवन को सार्थकता प्रदान की।

श्याम जी के ऊपर ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों की कड़ी नज़र रहने के कारण वर्मा जी 1907 में ''इण्डिया हाऊस'' की पूरी जिम्मेवारी वीर सावरकर पर छोड़ कर स्वयं इंग्लैंड छोड़कर पैरिस (फ्रान्स) चले गए और 1914 तक वे पैरिस में रहे। 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने से इंग्लैंड का दबाब पड़ने से वर्मा जी पैरिस से स्विटज़रलैण्ड होते हुए जेनेवा चले गए और वहीं पर क्रान्तिकारियों का हृदय सम्राट 31 मई 1930 को स्वर्ग सिधार गए।

वर्मा जी के पैरिस जाने के बाद ''इण्डिया हाऊस'' का काम वीर सावरकर ने बड़ी जिम्मेवारी से सम्भाला और वहीं बैठकर वीर सावरकर ने सन् 1857 को अंग्रेज़ों द्वारा सैनिक विद्रोह बताए गए विद्रोह को ''स्वतन्त्रता संग्राम'' की संज्ञा देकर एक पुस्तक लिखी जिसके ऊपर अंग्रेज़ों ने छपने से पहले ही प्रतिबन्ध लगा दिया। इस पुस्तक के लिखने के कारण तथा क्रान्तिकारियों का प्रेरणादायक मानकर वीर सावरकर को दो जन्मों यानि 50 वर्षों की सज़ा देकर मोरिया नामक पानी जहाज द्वारा लन्दन से भारत लाया जा रहा था, तब यह जानकर कि मुझे मृत्युपर्यन्त जेल में ही सड़ना पड़ेगा, इस स्थिति से बचने के लिए उन्होंने एक अद्भुत साहस का परिचय दिया और वे जहाज के पखाना घर की खिड़की से समुद्र में कूद गए और संगीनों की साया में समुद्र में तैरते हुए फ्रांस के तट पर पहुंचे। यह घटना संसार के इतिहास की एक प्रमुख घटना है। अंग्रेजों के भय से फ्रांस ने सावरकर को अंग्रेजी सरकार को सौंप दिया। अंग्रेजी सरकार ने उनको 1920 से 1929 तक कालापानी की जेल में रखकर उनको अमानवीय कठोर दण्ड दिया। फिर रत्नागिरी की जेल में रख और फिर 1937 में जेल से रिहा किया। इसके बाद भी वीर सावरकर उन्नीस साल और जीवित रहे पर भारत की कांग्रेस सरकार ने उनको कोई सम्मान न करके अपनी कृतघ्नता का ही परिचय दिया।

इसके बाद खुशीराम बोस और प्रफुल्ल कुमार चाकी दो युवा क्रान्तिकारी आते हैं जिन्होंने मिस्टर मुज्जफरपुर में 30 अप्रैल 1908 को बम फेंका, परन्तु वह बम फोर्ड की गाड़ी में न लगकर एक दूसरी गाड़ी में लगा जिसमें दो अंग्रेज रमणियां थीं। एक श्रीमती केनेडी दूसरी कुमारी केगड़ी, दोनों वहीं ढेर हो गई। इसके 23 दिसम्बर 1912 को लार्ड होर्डिंग के सजे हुए हाथी पर निकल रहे जुलूस पर दिल्ली के चांदनी चौक पर रास बिहारी बोस के नेतृत्व में बम फेंका गया जिसमें लार्ड हार्डिंग तो बच गया। महावत मारा गया, परन्तु इससे सारे भारत में क्रान्ति की आग जल उठी और अंग्रेज़ों ने भी इसका बड़ी क्रूरता से दमन किया। इसी समय लाहौर में भी दो जगह बम फेंके गए जिससे पूरे भारत के क्रान्तिकारियों को पकड़ना आरम्भ कर दिया, जिसमें भाई बालमुकुन्द जो भाई परमानन्द का चचेरा भाई था, मास्टर अमीचन्द, मिस्टर अवध बिहारी लाल और बसन्त कुमार विश्वास जिसने लार्ड होर्डिंग के जुलूस पर बम फेंका था। इन चारों को पकड़ लिया गया। रास बिहारी बोस किसी प्रकार से बचने में सफल हो गया और इन चारों को फांसी दे दी गई।

सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध की चिंगारी जल उठी थी तब अंग्रेजी सरकार का ध्यान विश्व युद्ध की ओर बंटा हुए देखकर, भाई परमानन्द के निर्देश में कपूरथला के एक मन्दिर में एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया जिसमें रास बिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सन्याल, करतार सिंह सराभा, विष्णु गनेश पिंगले जो दक्षिण भारत का युवा क्रान्तिकारी था, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम. ए. मुख्य थे। इन्होंने मिलकर यह विचार किया कि यदि हम सैनिक छावनियों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध स्वतन्त्रता की भावना भर देवें तो सब सैनिक छावनियों में एक साथ विद्रोह हो जाएगा। शहरों और गांवों में भी स्वतन्त्रता के भाव भर देवें तो सारे भारत में अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हो जाएगा, तब अंग्रेज़ दोनों तरफ ध्यान नहीं दे सकेंगे और उन्हें भारत आजाद करना ही पड़ेगा। सन् 1857 जैसी योजना पर विचार करके क्रान्तिकारियों ने आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, लाहौर और फिरोजपुर आदि सैनिक छावनियों से सम्पर्क किया तथा गांवों व शहरों में घूम-घूम कर स्वतन्त्रता की भावना को फैलाया। इन कामों में करतार सिंह सराभा तथा पिंगले सबसे अग्रणीय थे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

महर्षि दयानन्द की प्रथम शिष्या

-ले० इन्द्रजित देव चूना भट्टियां, यमुनानगर

पंजाब के ज़िला होशियारपुर में एक कस्बा है-हरियाना। इस कस्बे में आर्य समाज के दो उपदेशक-लेखक उत्पन्न किए हैं। एक का नाम है-माई भगवती और दूसरे हैं-श्री हरिवंशराय मेहता जी।

श्री मेहता जी का जन्म 1917 ईस्वी में हुआ था। भारत सरकार के संचार मन्त्रालय में कार्य करने के पश्चात् जब वे सेवा-निवृत्त हुए तो वे उत्तर प्रदेश के लखनऊ में निवास करने लगे। श्री आचार्य हरिशरण सिद्धान्तलंकार से प्रेरणा पाकर आप वेदाध्ययन करते रहे हैं तथा कई वैदिक पत्रिकाओं में लेख भी छपाते रहे हैं। आपकी रचनाएं दिव्योपदेश, सुमधुर पुष्पांजलि भक्त की जीवनचर्या नाम से प्रकाशित हुई थीं।

माई भगवती का जन्म सन् 1844 ई. में एक उच्च क्षत्रियकुल में हुआ था। तब भारत भर में स्त्री शिक्षा का नाम तक न था। तब पढ़ने लिखने में पुरुष भी बहुत पिछड़े हुए थे। आठवीं कक्षा तक पढ़ चुके पुरुष बहुत आदरणीय पद ग्रहण करते थे। कुछ पुरुष मन्दिरों के पुजारियों से थोड़ी-बहुत कथित धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर लेते थे। स्त्रियां का पढ़ना तो अत्यन्त हेय कार्य माना जाता था। माता भगवती जी का पूर्व नाम पार्वती था। उनके परिवार ने बड़े साहस से निर्णय लेकर उन्हें एक पण्डित जी के पास पढ़ने के लिए भेजना आरम्भ किया। माता ने थोड़े ही दिनों में कई ग्रन्थों का स्वाध्याय कर लिया। अन्ध विश्वासों व संकीर्ण दृष्टिकोण वाले समाज के कथित ठेकेदारों उनकी शिक्षा का विरोध किया व उन्हें अनेक प्रकार के दुःख भी पहुंचाए। कई-कई दिनों तक उन्हें भूखी-प्यासी भी रहना पड़ा परन्तु उन्होंने सभी कष्टों को वीरतापूर्वक सामना किया।

माता भगवती का नवीन वेदान्त की ओर झुकाव होता चला गया परन्तु इसी बीच कई शंकाएं भी उनके दिमाग में नवीन वेदान्त के सिद्धान्तों पर उत्पन्न हुई, जो समुचित समाधान न पा सकीं। संयोग से उनको कालान्तर में ''सत्यार्थ प्रकाश'' मिला तथा उन्होंने इसका गहन-गम्भीर अध्ययन किया। परिणाम यह निकला कि माता जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को एक पत्र भेजकर उन शंकाओं के समाधान करने की प्रार्थना की। महर्षि दयानन्द के दर्शन करने की प्रबल इच्छा भी माता जी ने इस पत्र में प्रकट की। तब महर्षि मुम्बई में थे। पत्र पाकर महर्षि ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। माता भगवती अपने भाई श्री चूनी लाल जी के साथ जब महर्षि के चरणों में उपस्थित हुईं तो महर्षि अपने खैमे में ही रहे। बीच में पर्दा था। माई भगवती ने अपनी शंकाएं प्रस्तुत की जिनका समाधान महर्षि जी ने कर दिया। माता जी का मन पूर्ण सन्तुष्ट हुआ तो उन्होंने महर्षि से अपने भविष्य के जीवन के लिए मार्गदर्शन देने के अनुरोध किया। महर्षि ने उन्हें कहा-''इस समय स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय है। यदि तुम करना चाहती हो तो अपने क्षेत्र में जाकर स्त्रियों की शिक्षा, उन्नति तथा उनके कर्त्तव्य व अधिकारों के लिए अपना जीवन अर्पित कर दो।''

माता भगवती जी ने महर्षि दयानन्द जी के आदेशानुसार शेष जीवन अर्पित कर दिया। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि वे महर्षि दयानन्द की प्रथम शिष्या थीं। आर्य समाज के प्रथम भजनोपदेशक (पंडित अमीं चंद मेहता) को जन्म देने का गौरव पंजाब को मिला तो प्रथम आर्य स्त्री भजनोपदेशिका माता भगवती भी पंजाब की ही सुपुत्री थीं। दोनों ने महर्षि के दर्शन किए थे व दोनों को महर्षि की प्रेरणा व माता व आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ था। माई जी की बुद्धि विशाल थी। थोड़े ही समय में बहुत से ग्रन्थ पढ़े तथा जीवन भर पढ़ने-लिखने में ही लगी रहीं। उन्हें तत्कालीन पुरुष प्रधान समाज ने बहुत कष्ट दिए परन्तु माता जी ने धैर्यपूर्वक सबका सामना किया। पंजाब ही नहीं, उत्तर भारत के नगर-नगर में जाकर व्याख्यान दिए तथा स्त्री-शिक्षा का प्रचार किया। उनके स्वरचित ललित व मनोहर भजन श्रोताओं पर भरपूर प्रभाव डालते थे। इनका एक संग्रह विरजानन्द यन्त्रालय, लाहौर से 'अबला मति वेग रोधक संगीत' नाम से सन् 1893 ई. में प्रकाशित हुआ था।

माई भगवती जी ने अपने कस्बे में एक कन्या पाठशाला भी खोली जिसमें वे स्वयम अवैतनिक अध्यापिका रहीं। पढ़ाई के अतिरिक्त प्रतिदिन सत्संग भी चलता था। इससे नारियों ने माई जी के उपदेशों द्वारा बहुत लाभ प्राप्त किया। माई जी का देहान्त सन् 1899 ई. में 55 वर्षों की आयु में हुआ था। माता जी ने मरने से पूर्व अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति का सदुपयोग करने व नारी शिक्षा के प्रचार प्रसार में ही लगाने की वसीयत करके एक समिति को सौंप दी थी। वे लोग जो उनका विरोध करते थे, उनके विचार भगवती जी के अन्तिम दिनों में परिवर्तित हो गए व भगवती जी के कार्यों व योग्यता के आगे नतमस्तक हो गए थे। जब माई भगवती जी की शवयात्रा शुरू हुई थी तो सहस्त्रों पुरुष उनके शव पर पुष्प वर्षा करते तथा सामूहिक रूप में जयदेवी, जयदेवी बोलते हुए मरघट तक गए थे। महर्षि दयानन्द की प्रथम शिष्या की पावन स्मृति को सश्रद्ध नमन्।

बन्धन

-ले० श्री महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव सुन्दर नगर

जग से ज्यों-ज्यों नाता जोड़ा।
चुकता रहा थोड़ा-थोड़ा।।

स्वछन्द हुआ ज्यों-ज्यों-
मन का घोड़ा,
मारा-मारा भटका,
दिग्भ्रमित हुआ दौड़ा-दौड़ा....

आशाओं ने आकर घेरा,
अभिलाषाओं ने डाला डेरा,
निराशाओं के जंगल में भटका-
असफलताओं के दंगल में अटका।

मैं-मेरे के बन्धन में
कभी देह हुआ
कभी नेह हुआ
कभी गेह हुआ
देह-नेह-गेह के भंवर में भला
कौन, कहां विदेह हुआ....

वार्षिक महोत्सव

करुणावरुणालय प्रभु की असीम कृपा से गुरुकुल हरिपुर, जुनानी, ओड़िशा का षष्ठ वार्षिक महोत्सव विक्रम् सम्वत् 2072, तिथि-माघ कृष्ण पंचमी, षष्ठी, सप्तमी तदनुसार दिनांक 29, 30, 31 जनवरी 2016 दिन शुक्र, शनि, रविवार को आयोजित है।

इस त्रिदिवसीय महोत्सव पर अनेक प्रेरक कार्यक्रम व सम्मेलन होंगे। जिसमें राज्य व राज्य बाहर से पधारे प्रतिष्ठित विद्वानों, साधु-सन्तों व सद्गृहस्थियों का मार्गदर्शन व सान्निध्य प्राप्त होगा। कार्यक्रम का विस्तृत विवरण निमन्त्रण-पत्र आपकी सेवा में प्रेषित है।

-दिलीप कुमार जिज्ञासु

महिलाएं नग्नता से बचें

-ले० अशोक आर्य 104 शिप्रा अपार्टमैंट, कौशाम्बी, गाजियाबाद

वेद ने महिलाओं के लिए स्पष्ट आदेश दिया है कि उसे कदापि अपने अंगों का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। आज अनेक महिलाएं नाच अथवा गानों के अवसर पर अपने कुछ अंगों को नग्न करके प्रदर्शन करती हैं। वेद तो नाच गाने के समय भी इस प्रकार की नग्नता के विरुद्ध ही आदेश देता है। यह ही एक मात्र कारण है कि हमारी आज की महिलाएं जब कत्थक नृत्य करती हैं तो उनके शरीर का कोई भी अंग नग्न रूप में हमें दिखाई ही नहीं देता है। महिलाओं के लिए वेद का आदेश है कि वह कभी भी और किसी भी अवस्था में अपनी नग्नता का प्रदर्शन न करें। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में हमें स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है:

मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।। ऋग्वेद ८.३३.१९।।

इस मन्त्र के माध्यम से परमपिता परमात्मा विश्व की नारी मात्र को उपदेश करते हुए कह रहे हैं कि हे नारियो ! यह आवश्यक है कि तुम इस प्रकार के वस्त्र धारण करो, तुम इस प्रकार के वस्त्र धारण करो कि जिन्हें पहनने से तुम्हारे शरीर के अंग कभी भी और किसी भी अवस्था में किसी को भी दिखाई न दें।

मन्त्र के इस संकेत से ही हमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि नारी के अंगों के प्रदर्शन मात्र से समाज में कितनी बुराइयां पैदा हो जाती हैं। आज हम नारियों से छेड़छाड़ की अनेक घटनाएँ प्रतिदिन देख रहे हैं, प्रतिदिन नारियों के साथ अनाचार और बलात्कार हो रहे हैं। हमारी सरकारें जितना इन समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करती हैं, यह समस्या उतनी ही अधिक विकराल होती जा रही है। इस का क्या कारण है ? इस का एक मात्र कारण है कि हमने प्रभु के वेद के माध्यम से दिए गए इस उपदेश, उस आदेश के उल्ट चल रहे हैं, जिस में कहा गया था कि नारियां कभी भी अपने अंगों का प्रदर्शन न करें। आज की नारी समझती है कि अर्ध नग्न रहना उसका अधिकार है। जब कोई नेता नारी की इस इच्छा के विरोध में बोलता है तो सब नारियां यहाँ तक कि महिला आयोग भी बोलने लगता है कि यह नारी की स्वाधीनता पर आक्रमण है। कैसी स्वाधीनता ? जिस स्वाधीनता से दूसरों को ही नहीं स्वयं को भी हानि होती हो, उस स्वाधीनता का क्या लाभ ? इस प्रकार की स्वाधीनता के सम्बन्ध में तो किसी को सोचना ही नहीं चाहिए। फिर यह वेद का आदेश है कि नारी को अपनी नग्नता का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। इस ईश्वरीय विधान को जब हम स्वीकार नहीं करते तो हमारा नाश तो होगा ही और वह हो भी रहा है। इसलिए हमें ईश्वरीय विधान को स्वीकार करते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि हमारी महिलाएँ किसी रूप में भी अपने अंगों को नग्न न करें।

वेदादेश ही हमारी आर्यों की मर्यादा है। इसका अक्षरश: पालन ही हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए। अन्यथा हमारा अंध कूप में गिरना निश्चित है। इससे बचने के लिए और सदा प्रकाश में प्रकाशित रहने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम ईश्वर के बनाए हुए नियमों का सदा पालन करें। जब नारियां सब प्रकार की आर्य मर्यादाओं का पालन करती हुई अपने जीवन को चलाती हैं तो वह एक दिन अपने पुरुषार्थ के कारण उस सर्वोच्च पद को प्राप्त करने में सक्षम हो जाती हैं, जिस पद को हम ब्रह्मा के नाम से जानते हैं।

हम जानते हैं कि यज्ञ करते समय एक आसन ब्रह्मा के लिए होता है। परमपिता परमात्मा के प्रतिनिधि स्वरूप एक महा विद्वान् व्यक्ति जिसे पंडित कहा जाता है, इस आसन पर बैठता है। यह यज्ञ की सब क्रियाओं का ज्ञानी होता है तथा यज्ञ में कोई गलती न हो, कोई कमीं न रह जावे, इसलिए वह यज्ञ की सब विधियों का बड़े ही ध्यान से निरिक्षण करता है। कुछ इस प्रकार का ही उपदेश इस मन्त्र के माध्यम से हमारी महिलाओं को दिया गया है।

मन्त्र स्पष्ट कहता है कि यदि हमारी महिलाओं को ब्रह्मा के पद के योग्य बनना है तो वह शरीर के अंगों का प्रदर्शन न करें और जितनी भी उचित आर्य मर्यादाएं हैं, उन सब मर्यादाओं का पालन करें। यदि वह इस प्रकार का कार्य नहीं करती तो वह किसी भी अवस्था में ब्रह्मा के सर्वोच्च पद को प्राप्त नहीं कर सकतीं।

इस सब से यह तथ्य सामने आता है कि सार्वजनिक स्थानों पर इस प्रकार के नग्न अथवा अर्ध नग्न चित्र लगा कर अश्लीलता का प्रचार करना सदा ही ब्रह्मचर्य के नाश तथा सदाचार के विरुद्ध ही होता है। आज निरंतर बढ़ रहे इस दुष्कर्म के विरुद्ध जनता और समाज को एक प्रबल आन्दोलन चला कर सरकार तथा समाज के इन दुराचारियों को झिझोंड़ना चाहिए। सरकार को यह सब न केवल कानून के विरुद्ध बनाते हुए इस अश्लीलता को समाप्त करने के लिए कमर कस कर आगे आने की आवश्यकता है।

श्री श्याम लाल आर्य नहीं रहे

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौंक पटियाला के पूर्व प्रधान श्री श्याम लाल आर्य नहीं रहे। वह 85 वर्ष के थे। उनका निधन दिनांक 24 नवम्बर, 2015 को शाम 7 बजे हुआ। दिनांक 25 नवम्बर 2015 को पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार पंडित ओंकार नाथ शास्त्री ने कराया। दिनांक 29 नवम्बर 2015 उनकी श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धांजलि देते हुए डा. कुन्दन लाल पाल ने बताया कि श्री श्याम लाल आर्य ने लगभग 60 वर्ष से आर्य समाज के विभिन्न पदों पर कार्य किया और वह स्वाध्यायशील एवं लगनशील व्यक्ति थे। प्रत्येक रविवार को एक नए वेदमन्त्र की व्याख्या आर्य समाज के सत्संग में करते थे। स्वामी ब्रह्मवेश जी ने उन्हें एक चलती-फिरती आर्य समाज बताते हुए कहा कि उन्होंने पूर्ण वैदिक जीवन व्यतीत किया। वह प्रात:, सायं सन्ध्या, योग, प्राणायाम आदि प्रतिदिन करते थे। समाना के विधायक श्री ब्रह्म महिन्द्रा ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री श्याम लाल जी ने जाने से आर्य समाज की जो क्षति हुई है उसे पूरा नहीं किया जा सकता। उन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के बारे में ज़ोर दिया और कहा कि आर्य समाज को अपने कार्यक्रम खुले प्रांगण में करने चाहिएं। **-पं० ओंकार नाथ शास्त्री पुरोहित**

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में गायत्री महायज्ञ का आयोजन

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर में माघ मास में एक महीना लगातार चलने वाले दु:खनिवारक सुखवर्षक गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनांक 14 जनवरी 2016 वीरवार से 14 फरवरी 2016 रविवार तक किया जा रहा है। यह कार्यक्रम दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक चलेगा। इस एक महीने चलने वाले कार्यक्रम में 14 से 20 जनवरी तक आचार्य उदयन जी गुरूकुल करतारपुर के प्रवचन, 21 से 28 जनवरी तक आचार्य शिवदत्त पाण्डे जी उत्तरप्रदेश के प्रवचन, 29 से 4 फरवरी तक आचार्य सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय जालन्धर के प्रवचन तथा 5 फरवरी से 14 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी सुन्दरनगर के प्रवचन होंगे। भजन स्त्री समाज की बहनों के द्वारा गाए जाते हैं। आप सभी से प्रार्थना है कि इस गायत्री महायज्ञ के कार्यक्रम में पधार कर पुण्य अर्जित करें।

नोट:- इस कार्यक्रम में पुरूष भी सादर आमन्त्रित हैं।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज

पृष्ठ 4 का शेष-सन् 1857 के.....

पूरी तैयारी करके 21 फरवरी 1915 का दिन एक विद्रोह करने का निश्चित भी कर दिया। परन्तु इन्हीं का एक साथी कृपाल सिंह ने गद्दारी की और उसने कुछ लालच देकर निश्चित दिन से कुछ पहले पुलिस को खबर देकर सारी योजना का भण्डाफोड़ कर दिया। पुलिस का दमन चक्र चला और खोज-खोजकर क्रान्तिकारियों को पकड़ा जाने लगा।

सैनिक छावनियों के सैनिकों से सब हथियार छीन लिए तथा उनको भी जेलों में डाल दिया गया। क्रान्तिकारियों में से रास बिहारी बोस तो किसी प्रकार देश से निकलकर जापान चले गए और वहीं बस गए, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारतीय सैनिक जो जर्मन, जापान के विरुद्ध अंग्रेज़ों की ओर से लड़ रहे थे उनकी आजाद हिन्दू फौज बनाकर सन् 1942 में सुभाष चन्द्र बोस के सुपुर्द कर दी। बाकी 24 क्रान्तिकारियों को पकड़ लिया गया जिनमें 17 क्रान्तिकारियों में कुछ को काला पानी की सज़ा मिली कुछ को छोड़ दिया गया। काला पानी की सज़ा वालों में विशेष नाम भाई परमानन्द का है और सात क्रान्तिकारियों को फांसी चढ़ने वालों में एक करतार सिंह सराभा दूसरा पिंगले का नाम मुख्य है, जिन्होंने बड़ी प्रसन्नता के साथ फांसी के फन्दे को चूमा और इस प्रकार देश को स्वतन्त्रत करवाने का दूसरा प्रयास भी असफल होकर समाप्त हो गया।

पंडित भीमशंकर जी साखरे नहीं रहे

हिंदी व मराठी भाषा में वैदिक साहित्य का लेखन करने वाले, 'श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार' प्राप्त, लगनशील वेदप्रचारक, पुरोहित तथा आर्य समाज आलन्द (जिला गुलवर्ग-कर्नाटक) के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री भीमाशंकर चन्दप्पा साखरे जी का दिनांक 21 अक्तूबर, 2015 की मध्यरात्रि में 2.30 बजे वृद्धापकालीन रुग्णता के कारण गुलबर्गा में 84 वर्ष की आयु में दु:खद निधन हो गया। नि:संतान रहे साखरे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई, दत्तकपुत्र श्री नरेन्द्र, बहु सौ. स्वरूपा एवं भाई के संयुक्त परिवार को छोड़कर संसार से विदा हो गए।

कर्नाटक व महाराष्ट्र के सीमावर्ती इलाके में मराठी, कन्नड़ व हिन्दी भाषा में यज्ञादि कार्यों के माध्यम से वेद प्रचार करने वाले श्री साखरे जी के कई लेख आर्य जगत् की कई विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपते थे। 'सुरभारती प्रकाशन, सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र)' ने उनके हिंदी मराठी में लिखे यज्ञ तथा संस्कारों के 12 ग्रंथ प्रकाशित किए हैं। अपना प्रत्येक ग्रन्थ वे आर्य जगत् के अनेकानेक मान्यवर विद्वानों की सेवा में भेजते थे। विद्वानों ने उनके इन ग्रंथों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। सुरभारती प्रकाशन के कारण उनका तथा उनके कारण सुरभारती प्रकाशन का नाम आर्य जगत् में सर्वदूर पहुंच गया है।

स्व. साखरे जी मृदुभाषी, मिलनसार, परिश्रमी, शांत, सुस्वभावी व आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्त्ता के रूप में पहचाने जाते थे। उसी दिन दोपहर 4 बजे तक उनके पार्थिव पर वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किए गए।

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को याद किया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 27.12.2015 (रविवार) को प्रात: 9.30 बजे हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को याद किया गया। श्री दर्शन कुमार गर्ग एवं श्रीमती सुदेश गर्ग ने अपने समूचे परिवार के साथ यज्ञ पद को प्राप्त किया। नगर से पधारे आर्यजनों ने यज्ञ कुण्ड में आहुतियां डालीं। इससे पूर्व दिनांक 23.12.2015 को भी हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी के महान बलिदान दिवस पर आहुतियां डाली गईं। दिनांक 27.12.2015 को श्रद्धेय आचार्य भद्रसेन जी की देख-रेख में दयानन्द हाल में कार्यक्रम चला। श्रीमती प्रबोध चौधरी और श्रीमती बिमला भाटिया ने मार्मिक गीत गाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात प्रो. यशपाल वालिया ने ज़िला जालन्धर के ग्राम तलवन में श्री नानक चन्द के घर में जन्मे मुन्शी राम की जीवन यात्रा में उपस्थित आर्यजनों को अवगत कराया। व्यक्ति के जीवन में कोई घटना घट जाती है तो उसके जीवन को बदल कर रख देती है। ऐसी ही घटना दुर्व्यसनों में लिप्त मुंशीराम के जीवन में घटी जब बरेली में पधारे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की भेंट से जीवन का कायाकलप हो गई। मुन्शी राम का स्वामी श्रद्धानन्द बन जाना कोई छोटी सी घटना नहीं है। जिससे नशे में लिप्त आज का युवक सीख ले सकता है। इस विशेष सभा के मुख्य प्रवक्ता प्रिं. कैलाश चन्द्र जी शर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को एक महान समाज सुधारक, धर्म प्रचारक, शिक्षा शास्त्री और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम का वीर सैनानी बताया। उन्होंने आगे कहा कि अपने व्यक्तित्व के शिखर पर पहुंचे स्वामी श्रद्धानन्द जी का गांधी जी को "**महात्मा**" कह कर पुकारना देश में हो नहीं सारे विश्व में परिचित हो गया। स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय कांग्रेस अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिया। सहिष्णुता की याद बात करें तो स्वामी जी ने जुमां के रोज़ जामा मस्जिद के प्रचीर से वेद मन्त्र से शुरू कर अपना भाषण दिया। यही नहीं, अमृतसर में "गुरु का बाग" आन्दोलन में सिक्खों के साथ जुड़कर सहयोग दिया। उनके द्वारा चलाया गया "शुद्धि आन्दोलन" मुख्यत: सोहाद्रपूर्ण था। उनका बलिदान इसकी एक शहादत है और कारावास की यातना सही। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना तो उनकी भारतीय एवं वैदिक शिक्षा प्रणाली हेतु एक अदभुत देन है। ऋषि के ऋण से उऋण होने का इससे बढ़िया उत्तर कहां मिलता है। अन्तत: सभी उपस्थित आर्यजनों ने मिल बैठ ऋषि प्रसाद चखा। इस विशेष सभा में पत्रकार श्री अविनाश भंडारी, प्रो. पी. के. धीर, प्रो. अजीत सिंह जब्बल, आचार्य भद्रसेन जी की उपस्थिति लेखनीय है।

-प्रो. एन. के. शर्मा प्रधान

आर्य समाज बंगा रोड़ फगवाड़ा का 106वां वार्षिकोत्सव

20 नवम्बर 2015 शुक्रवार से 22 नवम्बर रविवार तक हर्षोल्लास से भारतवर्ष में प्रसिद्ध एवं मूर्धन्य विद्वान आचार्य पंडित ज्ञानेश्वर भारती जी (यमुनानगर, हरियाणा) के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ, जिसमें कनेडा देश से पधारे महान चिन्तक श्री शान्ति स्वरूप जी वेद प्रचारक विशेष रूप से पधारे और उत्सव की शोभा बढ़ाई। प्रसिद्ध संगीताचार्य श्री पंडित कुलदीप भास्कर जी अपने साथी तबलावादक श्री चांद सिंह के साथ पधारे। प्रात: के कार्यक्रम 8 बजे से 10 बजे तक हुए। प्रात: 8 बजे से 8.45 तक श्री पंडित ज्ञानेश्वर भारती जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ, तत्पश्चात् श्री पंडित शान्ति प्रकाश जी का प्रवचन हुआ। इसके पश्चात् श्री पंडित कुलदीप भास्कर जी का मनोहर एवं मधुर संगीत का कार्यक्रम रहा, तत्पश्चात् यज्ञ के ब्रह्मा श्री पंडित ज्ञानेश्वर भारती द्वारा ईश्वर की वेद वाणी पर प्रवचन होते रहे। पहले दिन 20 नवम्बर को श्री मननशील सिन्धवानी एवं श्रीमती आशु सिंधवानी जी ने यजमान पद को सुशोभित किया। प्रथम दिवस 20 नवम्बर को हवन के पश्चात् ध्वजारोहण श्री पंडित ज्ञानेश्वर भारती एवं श्री शान्ति प्रकाश जी दोनों विद्वानों से अपने कर कमलों से किया। 21 नवम्बर को फगवाड़ा नगर निगम के युवक पार्षद श्री अनुराग मनखण्ड एवं श्रीमती सपना मनखण्ड ने यजमान पद को सुशोभित किया। 22 नवम्बर रविवार को प्रात: 8.30 बजे से 2.30 बजे दोपहर तक कार्यक्रम आयोजित हुआ। आज के दिन श्री राजेश बांसल एवं श्रीमती रचना बांसल जी ने यजमान पद की शोभा बढ़ाई। प्रात: 10 बजे तक यज्ञ पूर्णाहुति, संगीत, प्रवचन एवं यजमानों को ब्रह्मा जी ने आशीर्वाद देते हुए सभी यजमानों की दीर्घायु एवं मंगलमय सुख समृद्धि से भरपूर जीवन के लिए महान ईश्वर से प्रार्थना की। प्रात राश के पश्चात् राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री पंडित ज्ञानेश्वर भारती जी ने की। सम्मेलन का विषय था "नवयुवकों में वैदिक संस्कृति का ज्ञान कैसे कराया जाए।" इस अवसर पर आर्य समाज के मन्त्री श्री देशबन्धु चोपड़ा जी ने इस विषय की भूमिका बांधते हुए बताया कि आज का नवयुवक अपनी राष्ट्र की वैदिक संस्कृति के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ है, नवयुवकों को पाश्चात्य वातावरण बहुत आकर्षित कर रहा है। इसलिए यह बहुत ही आवश्यक है कि परिवारों में वैदिक विचारधारा का प्रचार किया जाए। केनेडा से पधारे श्री पंडित शान्ति स्वरूप जी ने कनेड़ा में वेद प्रचार के बारे में बताया कि वहां हिन्दू परिवार इस विषय में पूर्ण रूप से जागृत हैं। अध्यक्षीय भाषण में श्री पंडित ज्ञानेश्वर भारती जी ने कुरान की आयते सुना कर वेद ज्ञान की आवश्यकता एवं महत्त्व के विषय में अपने बहुत ही प्रमाणों के साथ प्रभावशाली विचार रखे। इस सम्मेलन में श्री कुलदीप भास्कर जी और श्री दिनेश पाथिक जी ने अपने साथी तबलावादकों के साथ बहुत ही मधुर संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्रोताओं ने प्रवचनों एवं भजनों का खूब आनन्द लिया। तीनों दिन ऋषि लंगर आयोजित किया। इस अवसर पर श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति के प्रधान श्री ध्रुव मित्तल जी एवं विद्यालय के प्राचार्य डा. उदयन जी पधारे। श्री ध्रुव मित्तल जी ने 500 रुपए का सात्विक दान दिया। कपूरथला से श्री कपूर चन्द गर्ग प्रधान आर्य समाज कपूरथला अपने साथियों के साथ पधारे, श्री कमल किशोर जी जालन्धर विशेष रूप से पधारे फगवाड़ा नगर निगम के मेयर श्री अरुण खोसला एवं श्रीमती अनिता सोमप्रकाश, धर्मपत्नी फगवाड़ा के एल. एफ. ए. पंजाब सरकार के चीफ पार्लियमैंट सैक्रेटरी, आर्य समाज गौशाला के अधिकारी एवं सदस्यगण, डी. ए. वी. कालेज फगवाड़ा का स्टाफ और गणमान्य नागरिक पधारे। अन्त में श्री देशबन्धु चोपड़ा मन्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती कैलाश ग्रोवर एवं अपनी ओर से सभी संस्थाओं एवं श्रोताओं एवं अपने सदस्यों का धन्यवाद किया। तीनों दिन श्रोताओं की उपस्थिति बहुत ही उत्साहवर्द्धक रही। शान्ति पाठ के पश्चात् सभी ने ऋषि लंगर का आनन्द उठाया।

विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द जी की शिक्षाओं को जीवन में धारण करें: विनोद भारद्वाज

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर में किया गया। समारोह का शुभारम्भ मुख्य मेहमान श्री विनोद भारद्वाज के अतिरिक्त प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री जिया लाल शर्मा, सुरिन्द्र मोहन तेजपाल, प्रबन्धक श्री कुलवन्त शर्मा, प्रिं. राजिन्द्र सिंह गिल, प्रिं. डा. एस.के. बारिया द्वारा ज्योति प्रज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी का प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री अरूण वेदालंकार जी के मधुर भजन हुए। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए श्री विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि समागम का मुख्य मन्तव्य विद्यार्थियों में आत्म संयम, विद्यालय की प्रगति में सहयोग करना तथा अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करना होता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की शिक्षाओं को विद्यार्थियों को जीवन में धारण करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शिक्षा के क्षेत्र में, धर्म के क्षेत्र में, राजनीति के क्षेत्र में लोगों को जागरूक किया। शुद्धि आन्दोलन के द्वारा उन्होंने अपने बिछुड़े भाईयों को गले लगाया।

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर में किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज, श्री जिया लाल मंत्री एवं वीरेन्द्र सरीन ध्वजारोहण करते हुये।

स्वामी श्रद्धानंद हिन्दू मुस्लिम एकता की प्रत्यक्ष मूर्ति थे। जिस समय खिलाफत के कारण मुसलमानों के दिल दहल रहे थे आप में उन्होंने पूर्ण विश्वास प्रकट किया। जामा मस्जिद के पवित्र मंच से आप के अमृत वचनों को जिन्होंने सुना वह गद्गद् हो उठा। मस्जिद में हिन्दू और मुसलमान बिना किसी भेदभाव के जमा थे और यह हिन्दू संन्यासी वेद मंत्र उच्चारण करके परस्पर सहयोग का संदेश सुना रहा था। मुसलमान स्वामी जी पर इतने प्रसन्न थे।

स्वामी जी ने शीघ्र ही महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन चलाया गया। पंजाब में असहयोग की अग्नि दिल्ली से भी अधिक भड़क उठी। जनरल डायर ने निष्पाप, शांत भारतीयों पर पंजाब के सुप्रसिद्ध एतिहासिक स्थान जलियांवाला बाग में गोली वर्षा कर दी। पंजाब में भारी आतंक छा गया। सन् 1919 के अन्तिम महीने में भारतीय राष्ट्रीय महासभा का उत्सव अमृतसर में होने वाला था। किस का साहस हो सकता था कि वहां जाकर अधिवेशन की तैयारियां करें लेकिन वह वीर सन्यासी श्रद्धानंद ही था जो पंजाब पहुंचे और निर्भय सिपाही की तरह लोगों के घरों में ढांढस बंधाने लगे। उनका बलिदान धर्म के लिए था, राष्ट्रहित के लिए था। उन्होंने विद्यार्थियों को कहा कि उन्हें अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास को विकसित करना चाहिए। इस कार्यक्रम में स्कूल के विद्यार्थियों ने कन्या भ्रूण हत्या, नशे तथा अन्य बुराईयों पर मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत करके सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर ललित मोहन पाठक प्रधान नगर कौंसिल, सतपाल उम्मट, प्रो. तेजी, प्रो. के.के.गोयल, ललित शर्मा आदि उपस्थित थे।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।